गोदान : आदर्श और यथार्थ का समन्वय

देवाशीष[1] एवं डॉ0 योगेन्द्र महतो[2]

[1]शोधार्थी

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

[2]विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

हिंदी साहित्याकाश के देदीप्ययान नक्षत्र मुंशी प्रेमचंद हिंदी कथा–साहित्य के सिरमौर माने जाते हैं और उनका उपन्यास 'गोदान' हिंदी उपन्यास का सिरमौर माना जाता है।

उपन्यासों में यथार्थ तथा आदर्श–चित्रण के संबंध में विद्वानों ने अपनी–अपनी स्वतंत्र धारणायें व्यक्त की हैं। 'गोदान' उपन्यास में भी यही समस्या उपस्थित होती है कि इसे यथार्थवादी उपन्यास कहा जाए या आदर्शवादी। इस पर विचार करने से पूर्व 'यथार्थ' और 'आदर्श' का अभिप्रेतार्थ पर विचार करना आवश्यक है।

'आदर्श' का अर्थ :

जीवन और जगत् में जो होना चाहिए, वही 'आदर्श' है। भारतीय दृष्टिकोण सदा से आदर्शवादी रहा है। हिंदी उपन्यासों में आदर्शवाद की अभिव्यक्ति इन रूपों में पायी जाती है – (क) उपदेशों के रूप में, (ख) सुधार की ओर प्रवृत्त करने के रूप में, (ग) समस्याओं के समाधान के रूप में, (घ) जीवन के आदर्श चित्रों को प्रस्तुत करने के रूप में।

'यथार्थ' का अर्थ :

'यथार्थ' शब्द को लेकर बड़ा विवाद है, जिससे अनेक दार्शनिक ऊहापोह सामने आये; फिर भी 'यथार्थ' के स्वरूप का अंतिम निर्धारण नहीं हो पाया। अधिकांश भारतीय दार्शनिक जगत् को मिथ्या मानते हैं, यथार्थ नहीं। मध्ययुगीन स्कौलेस्टिक यथार्थवादी शाश्वत, अमूर्त्त और भाव जगत् की वस्तु को यथार्थ मानते थे, स्थूल अथवा इन्द्रिय ग्राह्य को नहीं, किन्तु आधुनिक यथार्थवादी लॉक, थॉमस रीड आदि स्थूल या बाह्य संसार को 'यथार्थ' कहते हैं। 'यथार्थ' शब्द दार्शनिक रूप से कुछ भिन्न ही अर्थ का द्योतक है। सौन्दर्यशास्त्रीय बोध के रूप में भी इस शब्द का प्रयोग किया गया है।

समयक्रम से यथार्थ का संबंध जीवन के निम्न, गर्हित और अनैतिक पक्ष से स्थापित हुआ। अनैतिक, असामाजिक जीवन का चित्रण करने वाला उपन्यास 'यथार्थवादी उपन्यास' कहलाता था। इसके पश्चात् प्रेमचंद के उपन्यासों में आकर यथार्थवाद अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुआ। प्रेमचंद ने जीवन के गर्हित पक्ष का ही चित्रण नहीं किया, वरन् उसके प्रशस्त रूप का भी वर्णन किया।

गोदान में आदर्शवाद की प्रतिष्ठा

यह कहना कि 'गोदान' मात्र सत्य का वाहक है, अतिशयोक्ति ही कहा जायेगा। गोदान में मुख्य रूप से दो कथानक हैं–(क) ग्रामीण जीवन से संबंधित होरी की कथा, (ख) नागरिक जीवन से संबधित मेहता–मालती की कथा। इनमें मेहता–मालती की कथा का आयोजन उपन्यासकार के आदर्श की स्थापना के लिए ही हुआ है। इस कथानक के समस्त कहानी को अयथार्थ और अविश्वसनीय बना दिया है। 'गोदान' में उपन्यासकार निम्नलिखित आदर्श प्रस्तुत करना चाहते हैं :–

(1) **नारी विषयक आदर्श** – प्रेमचंद ने 'गोदान' में जिन आदर्शों को प्रस्तुत किया है, उनमें प्रमुखतम नारी विषयक आदर्श हैं। अनेक स्थलों पर इस आदर्श की प्रतिष्ठा हुई है। प्रेमचंद ने नारी के आदर्श गुणों का वर्णन अपने पात्र मेहता के मुख से कराया है –

''मेरे जेहन में औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी बेजुबानी से, अपनी कुर्बानी से अपने को मिटाकर पति की आत्मा का एक अंग बन जाती है। देह पुरुष की रहती है, पर आत्मा स्त्री की होती है।............स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवती है, शान्ति–सम्पन्न है, सहिष्णु है। पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं, तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।''[1]

इसी प्रकार की नारी का रूप 'गोदान' में उस समय मिलता है, जब मेहता, मालती द्वारा आयोजित विमेंस लीग की सभा में भाषण देते हैं। मेहता के द्वारा नारी विषयक आदर्श वस्तुतः प्रेमचंद का ही आदर्श है, जो परम्परागत तर्क रहित और युगबोध के प्रतिकूल है। यह स्मृति–ग्रन्थों में कथित नारी के आदर्श का ही परिवर्तित रूप है। यथार्थवादी परम्परा और विश्वास का विरोधी होता है। उसका आधार तर्क होता है। प्रेमचंद की नारी विषयक धारणा इसके सर्वथा विपरीत है, उसे यथार्थ नहीं कहा जा सकता।

(2) **नैतिक एवं चारित्रिक आदर्श** – प्रेमचन्द जीवन में नैतिक तथा चारित्रिक गुणों का महत्त्वपूर्ण स्थान मानते हैं। इसी कारण मेहता और मालती के चरित्रों में वे अपनी आदर्श नैतिकता ही प्रस्तुत करते हैं। 'गोदान' में शिकार वाली घटना की योजना नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा हेतु ही हुई है, जो अस्वाभाविक लगती है। मेहता और मालती की टोली जब शिकार खेलने जाती है, तो मालती, मेहता पर डोरे डालना प्रारम्भ करती है, किन्तु मेहता पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह

स्थिति यथार्थ चित्रण की दृष्टि से अस्वाभाविक ही कही जायेगी, कि एकान्त में युवक और युवती का मिलन होने पर और युवती के द्वारा हाव–भाव प्रदर्शित किये जाने पर भी युवक पर उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। यहाँ तक की नाला पार करते समय मेहता मालती का हाथ पकड़ कर नाला पार कराते हैं तथा मालती के चिपट जाने पर गीली साड़ी में अस्त–व्यस्त दशा में कन्धे पर चढ़ा लेते हैं। फिर भी मेहता पर काई प्रभाव नहीं पड़ता। यह प्रेमचंद की आदर्शवादी मनोवृत्ति का परिणाम है। तर्क और मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार होता, तो ऐसी स्थिति में मेहता और मालती के संभोग का चित्रण करता; किन्तु प्रेमचंद का नैतिक आदर्श उन्हें ऐसा नहीं करने देता।

(3) **प्रेमचंद की पवित्रता एंव अलौकिकता सम्बन्धी आदर्श–** 'गोदान' में प्रेमचंद प्रेम का आदर्श रूप प्रस्तुत करना चाहते हैं। उनकी दृष्टि में प्रेम पवित्र तथा आलौकिक पदार्थ है। वह संदेह और परीक्षा से परे है। प्रेम एकान्त आत्म–समर्पण है। वह देह नहीं, आत्मा की वस्तु है। प्रेम की मंदिर में परीक्षक बनकर नहीं उपासक बनकर ही वरदान पाया जा सकता है। इसी प्रेम के आदर्श को प्रस्तुत करने के लिए प्रेमचंद ने मेहता–मालती की कथा को अस्वाभाविक दिशा में मोड़ दिया। अन्यथा जब मालती स्वयं को मेहता के आदर्शो के अनुरूप ढाल लेती है और मेहता उससे विवाह का प्रस्ताव करते हैं, तो उसका विवाह कराकर कथा समाप्त हो जाती, किन्तु लेखक ने मालती के चरित्र–परिवर्तन द्वारा प्रेम का आदर्श स्थापित करने के लिए मालती द्वारा विवाह करने से इन्कार करना दिखाया है। इसके मूल में प्रेमचन्द का नारी, प्रेम और विवाह विषयक आदर्श कार्य कर रहा है, जो परम्परावादी, तर्क–रहित, युग–धारणा के प्रतिकूल और भावुकतापूर्ण है।

गोदान में यथार्थवाद की प्रतिष्ठा

उपर्युक्त आदर्शों की स्थापना होने पर भी इस बात को नहीं भूला जा सकता कि 'गोदान' में यथार्थवाद भी पूर्ण रूप से ही निखर कर आया है। मालती–मेहता की कथा को छोड़कर शेष 'गोदान' में यथार्थ की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। ग्रामीण–जीवन का इतना यथार्थवादी और व्यापक चित्रण शायद ही किसी भारतीय उपन्यास में मिले। 'गोदान' भारतीय कृषक–जीवन की आँसू भरी कहानी अथवा विषाद–गीत है। उपन्यास की रचना के समय भारत का कृषक वर्ग जमींदारों, महाजनों और पुरोहितों के निर्मम शोषण का शिकार था। 'गोदान' में 'बेलारी' गाँव के अधिकांश गरीब किसान इसी दुर्दान्त शोषण–चक्र के शिकार हैं। प्रस्तुत उपन्यास में कृषकों की इस दयनीय स्थिति का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है। मुंशी प्रेमचंद 'गोदान' उपन्यास में निम्नलिखित यथार्थ प्रस्तुत करना चाहता है :–

(1) **कृषक–जीवन की समस्याओं के सभी पक्षों का यथार्थ अंकन –** 'गोदान' उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें कृषक–जीवन की समस्याओं के सम्पूर्ण पक्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है।

कृषकों की निर्धनता, मूर्खता, अशिक्षा, रूढ़िप्रियता, अधंविश्वास, गन्दगी, हठधर्मिता, आपसी फूट एवं वैमनस्य तथा उनकी सरलता, उदारता, सहजता, धर्मभीरूता, सहानुभति आदि सभी बातों का विश्वसनीय तथा यथार्थ अंकन किया गया है। गावों में प्रायः फूहड़ किस्म के झगड़े होते रहते हैं। 'गोदान' मे इस प्रकार का पाँच स्थलों पर यथार्थ चित्रण हुआ है। इसी प्रसंग में पुलिस विभाग के अत्याचार, घूसखोरी, पंचायत, कन्या–विवाह की परेशानियों और दुश्ंचिताओं के भी यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किये हैं। ऐसे स्थलों की संख्या बहुत अधिक है।

(2) **मध्यम तथा निम्नवर्गीय परिवारों का यथार्थ अंकन** – कृषक–वर्ग की समस्याओं के साथ–साथ मध्यम तथा निम्नवर्गीय परिवारों का भी यथार्थ चित्रण 'गोदान' की यथार्थवादिता का दूसरा उदाहरण हैं। मध्यमवर्गीय परिवार के प्रतिनिधि पात्र राय साहब के जीवन का, उनकी समस्याओं और विशेषताओं का तथा खन्ना जैसे पूँजीपतियों द्वारा उनके शोषण का जैसा चित्रण प्रेमचंद ने किया है, वैसा अन्य किसी उपन्यासकार द्वारा संभव नहीं हुआ। निम्नवर्गीय मजदूरों के जीवन का भी प्रेमचंद यथार्थवादी चित्रण किये हैं। मिल–मालिक और मजदूरों के सघंर्ष का ऐसा विश्वसनीय वर्णन 'गोदान' में पहली बार हुआ है। खन्ना के जीवन का चित्रण करके पूँजीपतियों के अशांत पारिवारिक जीवन का यथार्थ रूप लेखक ने उपस्थित किया है। इस प्रकार न केवल कृषक वर्ग, अपितु कृषकेतर वर्ग को भी उन्होंने यथार्थ रूप में ही चित्रित करने का प्रयास किया है।

(3) **पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण में यथार्थ** – प्रेमचन्द ने अपने 'गोदान' उपन्यास में पात्रो के मनोवैज्ञानिक चित्रण में सत्यता को नहीं छोड़ा है। ऐसे स्थानों पर उनकी प्रतिभा, मानव–हृदय में प्रवेश करने की क्षमता तथा सूक्ष्म–निरीक्षण की शक्ति दर्शनीय है। राय साहब के यहाँ जाते समय होरी और भोला के वार्तालाप में लोभ, स्वार्थ, दंभ, आत्म–प्रशंसा, धूर्तता, छल, उदारता आदि मानवभावों का यथार्थवादी चित्रण उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है।

(4) **समस्याओं के समाधान में यथार्थ** – प्रेमचंद 'गोदान' से पहले के उपन्यासों में समस्याओं का चित्रण तो यथार्थवादी पद्धति पर किया है, किन्तु उनके समाधान आदर्शवादी हैं। 'सेवासदन' में सेवासदनों की स्थापना तथा 'प्रेमाश्रम' में प्रेमाश्रम की स्थापना द्वारा वेश्याओं और किसानों की समस्याओं का हल ढूँढ़ना अथवा शोषकों–पूँजीपतियों का हृदय–परिवर्तन दिखाकर कृषकों तथा मजदूरों को सुखी बनाने का यत्न आदर्शवादी समाधान है। 'गोदान' में समस्याओं के चित्रण तथा उनका समाधान दोनों ही यथार्थवादी है। प्रस्तुत उपन्यास में रातों–रात जमींदारों ओर शोषकों का हृदय–परिवर्तन नहीं दिखाया गया। 'गोदान' में समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते समय प्रेमचन्द तटरथ विश्लेषक ओर विद्रोही के रूप में सामने आये हैं। उनका विश्वास है कि केवल शुद्ध काम

लेने का कानून बना देने से किसानों की ऋण–समस्या का समाधान नहीं होगा, वरन् सरकार को ऋण देने की व्यवस्था करनी पड़ेगी। इसी को उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास के एक साहुकार पात्र झिंगुरी सिंह के द्वारा स्पष्ट कराया है –

''सरकार अगर आसामियों के रुपये उधार देने का कोई बंदोबस्त न करेगी, तो हमें इस कानून से कुछ न होगा। हम दर कम लिखाएँगे, लेकिन एक सौ में पचीस पहले ही काट लेंगे। इसमें सरकार क्या कर सकती है।''[2]

(5) **देशकाल और वातावरण चित्रण में यथार्थ –** उपन्यास का यथार्थ उसमें प्रस्तुत जीवन के प्रकार में नहीं, वरन् उस प्रविधि में निहित होता है, जिसके द्वारा वह प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास के पात्र उपन्यासकार द्वारा अनुभूत सत्य के प्रतीक होते हैं। उपन्यासकार की दृष्टि विशिष्ट के अंकन द्वारा सामान्य के अंकन पर होती है। उसका अधिक बल विशिष्ट व्यक्ति पर होता है। विशिष्ट व्यक्ति अथवा अवस्था का बोध देश और काल इन दो स्थितियों के प्रसंग में ही हो सकता है। प्रेमचंद ने 'गोदान' के पात्रों तथा उनके कार्यों को देश और काल की पृष्ठभूमि में स्थापित करके उन्हें व्यक्तित्व प्रदान किया है। उपन्यास में आये हुए सभी स्थानों–लखनऊ, सेमरी, बेलारी आदि की भौगोलिक स्थिति का पूर्ण वर्णन किया है। प्राकृतिक वर्णन कम है, किन्तु काव्यात्मक नहीं, यथार्थ है। पात्रों के नाम भी – होरी, गोबर, झिंगुरी सिंह, नोखेराम, हीरा, शोभा, दुलारी सहुआइन, मँगरूसाहु, धनिया, झुनिया, सिलिया, सोना, रूपा, पुनिया, (ग्रामीण पात्रों के नाम) तथा प्रो0 मेहता, रायसाहब अमरपाल सिंह, चन्द्रप्रकाश खन्ना, श्यामबिहारी तन्खा, मालती, गोविन्दी, सरोज (नागरिक पात्रों के नाम) पात्रों की शिक्षा–दीक्षा, आर्थिक–स्थिति, संस्कार आदि के अनुरूप हैं।

(6) **भाषा के प्रयोग में यथार्थ –** यथार्थवादी दार्शनिकों की मान्यता है कि शब्दों को वास्तविक पदार्थों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए और वह भी निश्चित रूप में। लोक के भाषा–विषयक सिद्धान्त को 'गोदान' में सर्वाधिक समर्थन प्राप्त हुआ है। प्रेमचन्द का एकमात्र उद्देश्य शब्दों द्वारा वस्तुओं का उनकी सम्पूर्ण ठोस विशिष्टता में बोध कराना है। इसमें वे पूर्ण सफल हुए हैं। 'गोदान' की भाषा चित्रण के विषय के प्रस्तुतीकरण में वे सर्वथा समर्थ हैं।

निष्कर्ष :

मुंशी प्रेमचंद 'गोदान' में 'यथार्थ' के साथ 'आदर्श' की प्रतिष्ठा भी करते चलते हैं। 'यथार्थ' की 'झाँकी' और 'आदर्श' का संकेत इस तरह मिश्रित हुए हैं कि साधारण पाठक लक्ष्य भी नहीं कर पाता। संगम की तरह यथार्थ की यमुना स्वच्छन्द रूप से अपने तटवासियों को अद्‌भुत सौन्दर्य से तृप्त करती है और आदर्श की गंगा से मिल जाती है। दूर तक सित–असित दोनों धाराएँ हिलती–मिलती, कभी श्याम, कभी स्वच्छ छटा से दर्शकों को रिझाती चलती हैं, परन्तु अन्त में 'यथार्थ' की 'यमुना' 'आदर्श' की 'गंगा'

में विलीन हो जाती है। अतः कहा जा सकता है कि 'गोदान' में 'आदर्श' और 'यथार्थ' का सुन्दर समन्वय है।

संदर्भ–सूची :

1. मुंशी प्रेमचंद, (2012) : 'गोदान', (प्रथम संस्करण), सूर्यप्रभा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, पृ0 – 142

2. मुंशी प्रेमचंद, (2012) : 'गोदान', (प्रथम संस्करण), सूर्यप्रभा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, पृ0 – 237